कुँवर नारायण

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कवि कुँवर नारायण का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). कुँवर नारायण जी की कोई दो प्रमुख काव्य रचनाएँ बताइए।
उत्तर – चक्रव्यूह और आत्मजयी।

प्रश्न 2 (आसान). उन्हें कौन सा सबसे बड़ा साहित्यिक पुरस्कार मिला?
उत्तर – ज्ञानपीठ पुरस्कार।

प्रश्न 3 (मध्यम). कुँवर नारायण जी ने कविता के अलावा किन विधाओं में लेखन किया है?
उत्तर – उन्होंने चिंतनपरक लेख, कहानियाँ, सिनेमा और अन्य कलाओं पर समीक्षाएँ भी लिखी हैं।

प्रश्न 4 (कठिन). नयी कविता के दौर में जब लंबी कविताएँ लोकप्रिय हो रही थीं, तब कुँवर नारायण जी ने किस तरह की रचना से अपनी प्रतिष्ठा बनाई?
उत्तर – उन्होंने 'आत्मजयी' जैसा प्रबंध काव्य रचकर प्रतिष्ठा प्राप्त की, जबकि उस समय प्रबंध काव्य का स्थान लंबी कविताएँ ले रही थीं।

» कुँवर नारायण की काव्यगत विशेषताएँ

प्रश्न 5 (आसान). कुँवर नारायण की कविताएँ अनावश्यक उलझाव से दूर क्यों थीं?
उत्तर – क्योंकि वे सीधी और साफ-सुथरी बात कहना पसंद करते थे।

प्रश्न 6 (आसान). उनकी कविताओं में कौन-कौन से दो गुण विशेष रूप से मिलते हैं?
उत्तर – भाषा और विषय की विविधता।

प्रश्न 7 (मध्यम). कुँवर नारायण को 'नागर संवेदना के कवि' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि उनकी कविताओं में शहरी जीवन की सूक्ष्म अनुभूतियाँ और उलझनें देखने को मिलती हैं, न कि ग्रामीण या प्राकृतिक सौंदर्य का सीधा विवरण।

प्रश्न 8 (कठिन). उनकी कविताओं में 'संशय, संभ्रम, प्रश्नाकुलता' बीज शब्द क्यों माने जाते हैं?
उत्तर – क्योंकि उनका कवि-स्वभाव जीवन को एक खुलेपन से समझने वाला था। वे सीधे फैसले या घोषणाएँ नहीं करते थे, बल्कि प्रश्नों और विचारों के माध्यम से गहरी पड़ताल करते थे, जिससे पाठक भी सोचने पर मजबूर होता था।

» 'कविता के बहाने' - परिचय और संदर्भ

प्रश्न 9 (आसान). कवि ने 'कविता के बहाने' में किसकी असीम संभावनाओं को दर्शाया है?
उत्तर – कविता की असीम संभावनाओं को।

प्रश्न 10 (आसान). आज के समय में कविता के वजूद को लेकर क्या आशंका व्यक्त की जा रही है?
उत्तर – यांत्रिकता के दबाव से कविता का अस्तित्व नहीं रहेगा, ऐसी आशंका है।

प्रश्न 11 (मध्यम). कविता के बहाने यह यात्रा कहाँ से कहाँ तक की है?
उत्तर – यह यात्रा चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है।

प्रश्न 12 (कठिन). कविता की किन-किन सीमाओं को तोड़ने की बात कही गई है?
उत्तर – कविता घर की सीमा, भाषा की सीमा और समय की सीमा को तोड़ती है।

» 'कविता के बहाने' - कविता एक उड़ान है

प्रश्न 13 (आसान). कविता की उड़ान को चिड़िया की उड़ान से बेहतर क्यों बताया गया है?
उत्तर – क्योंकि कविता की उड़ान असीमित होती है, जबकि चिड़िया की उड़ान सीमित होती है।

प्रश्न 14 (आसान). कविता उड़ते हुए कहाँ-कहाँ पहुँच सकती है?
उत्तर – कविता 'बाहर, भीतर, इस घर, उस घर' कहीं भी पहुँच सकती है, यानी हर जगह और हर मन में।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने' - इस पंक्ति का क्या अर्थ है?
उत्तर – इस पंक्ति का अर्थ है कि चिड़िया अपनी सीमित उड़ान के कारण कविता की असीमित और कल्पनाशील उड़ान को समझ ही नहीं सकती।

प्रश्न 16 (कठिन). कवि ने चिड़िया के उदाहरण से कविता की किस विशेषता को उजागर किया है?
उत्तर – कवि ने चिड़िया के उदाहरण से कविता की असीमितता, सार्वभौमिकता और समय-स्थान के बंधनों से मुक्ति की विशेषता को उजागर किया है। कविता कल्पना और भावनाओं से हर जगह पहुंच सकती है।

» 'कविता के बहाने' - कविता एक खिलना है

प्रश्न 17 (आसान). कविता का खिलना किसकी तरह होता है?
उत्तर – फूलों की तरह

प्रश्न 18 (आसान). फूलों के मुरझाने के बाद क्या होता है?
उत्तर – उनकी खुशबू और सुंदरता खत्म हो जाती है।

प्रश्न 19 (मध्यम). कविता 'बिना मुरझाए महकने' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि कविता के भाव, विचार और उसका असर कभी खत्म नहीं होता, वह हमेशा ताजा और प्रभावी रहता है।

प्रश्न 20 (कठिन). फूलों की क्या सीमा है जो कविता में नहीं है?
उत्तर – फूलों का जीवन और उनकी सुंदरता सीमित समय के लिए होती है, वे मुरझा जाते हैं। कविता में यह सीमा नहीं है, वह अमर है।

» 'कविता के बहाने' - कविता एक खेल है

प्रश्न 21 (आसान). बच्चों के खेल की सबसे बड़ी खासियत क्या होती है?
उत्तर – बच्चों के खेल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उसमें कोई सीमा नहीं होती और न कोई भेदभाव होता है।

प्रश्न 22 (आसान). कविता किस तरह 'सब घर एक कर देती है'?
उत्तर – कविता अपने भावों और विचारों से सभी लोगों को जोड़ती है, जिससे कोई भी पराया नहीं रहता और सब एक हो जाते हैं।

प्रश्न 23 (मध्यम). कविता को बच्चों के खेल के समान बताने का क्या उद्देश्य है?
उत्तर – इसका उद्देश्य यह बताना है कि कविता भी बच्चों के खेल की तरह सीमा-रहित, भेदभाव-मुक्त और सबको जोड़ने वाली होती है।

प्रश्न 24 (कठिन). कवि ने 'कविता के बहाने' कविता में बच्चों और फूलों के प्रतीकों का प्रयोग कर क्या संदेश दिया है?
उत्तर – कवि ने फूलों और बच्चों के प्रतीकों का प्रयोग करके यह संदेश दिया है कि कविता फूल की तरह सुंदर और महकने वाली है, जिसकी खुशबू कभी खत्म नहीं होती, और बच्चों के खेल की तरह यह सीमा-रहित, सबको जोड़ने वाली और बिना किसी भेदभाव के होती है।

» 'बात सीधी थी पर' - परिचय और संदर्भ

प्रश्न 25 (आसान). कविता 'बात सीधी थी पर' के कवि का नाम क्या है?
उत्तर – कुंवर नारायण

प्रश्न 26 (आसान). इस कविता का मुख्य विषय क्या है?
उत्तर – भाषा की सहजता और कथ्य-माध्यम का द्वंद्व

प्रश्न 27 (मध्यम). कवि के अनुसार 'बात सीधी' कब 'टेढ़ी' हो जाती है?
उत्तर – जब बात को समझाने के लिए भाषा को अनावश्यक रूप से तोड़ा-मरोड़ा जाता है या मुश्किल शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 28 (कठिन). कविता में 'कथ्य' और 'माध्यम' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर – 'कथ्य' का अर्थ है वह विचार या बात जो हम कहना चाहते हैं, और 'माध्यम' का अर्थ है वह भाषा या तरीका जिसका उपयोग हम अपनी बात कहने के लिए करते हैं।

» भाषा के चक्कर में बात का टेढ़ा होना

प्रश्न 29 (आसान). जब बात 'भाषा के चक्कर में टेढ़ी फँस गई' तो इसका क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि सीधी-सादी बात को अनावश्यक रूप से कठिन शब्दों में कहने पर वह उलझ गई और समझ से बाहर हो गई।

प्रश्न 30 (आसान). बात के टेढ़ा होने का क्या परिणाम हुआ?
उत्तर – बात के टेढ़ा होने से वह अपनी सहजता और स्पष्टता खो बैठी, और उसका असली मतलब श्रोताओं तक नहीं पहुँच पाया।

प्रश्न 31 (मध्यम). कवि ने 'भाषा को उलटा पलटा, तोड़ा मरोड़ा' क्यों?
उत्तर – कवि ने भाषा को उलटा पलटा, तोड़ा मरोड़ा ताकि बात या तो सही तरीके से बन जाए, या फिर भाषा के जाल से बाहर निकल आए और अपना मूल रूप ले ले।

प्रश्न 32 (कठिन). कविता के अनुसार, जब बात 'भाषा में बेकार घूमने लगी', तो कवि ने क्या किया और क्यों?
उत्तर – जब बात भाषा में बेकार घूमने लगी, यानी उसका प्रभाव खत्म हो गया और वह अर्थहीन हो गई, तो कवि ने हार कर उसे 'कील की तरह उसी जगह ठोंक दिया'। ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि वह अब अपनी बात को सुधार नहीं पा रहे थे, और उन्होंने उसे जैसे-तैसे पूरा करके खत्म कर दिया, भले ही वह प्रभावी न रही हो।

» तमाशबीनों की शाबाशी और बात का पेचीदा होना

प्रश्न 33 (आसान). 'तमाशबीनों की शाबाशी' से कवि पर क्या असर पड़ा?
उत्तर – तमाशबीनों की शाबाशी सुनकर कवि अपनी बात को और अधिक पेचीदा बनाता चला गया।

प्रश्न 34 (आसान). 'बात की चूड़ी मर गई' का एक सरल अर्थ बताओ।
उत्तर – बात अपना प्रभाव और अर्थ खो बैठी, वह बेजान हो गई।

प्रश्न 35 (मध्यम). कविता में 'शोर शबरदस्ती से' बात की चूड़ी मरने का क्या मतलब है?
उत्तर – इसका मतलब है कि कवि ने अपनी बात को ज़बरदस्ती, मुश्किल और दिखावटी शब्दों में कहने की कोशिश की, जिससे बात का असली सार ही खत्म हो गया और वह प्रभावहीन हो गई।

प्रश्न 36 (कठिन). कवि ने 'बात की चूड़ी मरना' और 'भाषा में बेकार घूमना' जैसे बिंबों का प्रयोग करके क्या दर्शाना चाहा है?
उत्तर – कवि इन बिंबों से यह दर्शाना चाहता है कि जब बात और भाषा का सामंजस्य बिगड़ जाता है, और वक्ता केवल वाहवाही पाने के लिए अपनी बात को अनावश्यक रूप से जटिल बनाता है, तो बात अपना मूल उद्देश्य और संवेदनशीलता खो देती है। वह सिर्फ शब्दों का एक खोखला ढाँचा बनकर रह जाती है, जिसमें न तो कोई अर्थपूर्ण कसाव होता है और न ही कोई प्रभावकारी ताकत।

» बात की चूड़ी मर जाना और कील की तरह ठोंकना

प्रश्न 37 (आसान). 'बात की चूड़ी मरना' का अर्थ क्या है?
उत्तर – बात का प्रभावहीन हो जाना।

प्रश्न 38 (आसान). जब बात की चूड़ी मर जाती है, तो कवि उसे क्या करता है?
उत्तर – कील की तरह ठोंक देता है।

प्रश्न 39 (मध्यम). कविता में 'कील की तरह ठोंकना' क्या दर्शाता है?
उत्तर – बात को जबरदस्ती और बिना किसी प्रभाव या कसाव के खत्म करना।

प्रश्न 40 (कठिन). कवि ने 'बात की चूड़ी मरना' और 'कील की तरह ठोंकना' के माध्यम से भाषा के किस दोष को उजागर किया है?
उत्तर – भाषा को अनावश्यक रूप से जटिल बनाने या मुश्किल शब्दों का प्रयोग करने से बात का असली अर्थ और प्रभाव खो जाता है, और अंततः वह बेजान होकर खत्म हो जाती है।

» भाषा को सहूलियत से बरतने का महत्व

प्रश्न 41 (आसान). भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है भाषा का सहजता और सरलता से प्रयोग करना।

प्रश्न 42 (आसान). अगर भाषा को सहूलियत से न बरता जाए तो क्या हो सकता है?
उत्तर – सीधी बात भी टेढ़ी हो सकती है, यानी उसका अर्थ या प्रभाव खो सकता है।

प्रश्न 43 (मध्यम). कविता में 'भाषा को सहूलियत से बरतना' क्यों ज़रूरी बताया गया है?
उत्तर – ताकि बात अपनी वास्तविक शक्ति और कसावट बनाए रखे और श्रोता तक सही ढंग से पहुँच सके।

प्रश्न 44 (कठिन). क्या केवल कठिन शब्दों का प्रयोग न करना ही 'भाषा को सहूलियत से बरतना' है? समझाइए।
उत्तर – नहीं, केवल कठिन शब्दों का प्रयोग न करना ही पर्याप्त नहीं है। 'सहूलियत से बरतना' मतलब सही शब्दों का सही समय पर और सही तरीके से प्रयोग करना भी है, ताकि बात प्रभावी बने।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. कुँवर नारायण जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

› हमें यह जानने के लिए कवि परिचय खंड देखना होगा।
› जानकारी के अनुसार, उनका जन्म '19 सितंबर, 1927' को हुआ था।
› और जन्म स्थान 'उत्तर प्रदेश' था।

उत्तर – कुँवर नारायण जी का जन्म 19 सितंबर, 1927 को उत्तर प्रदेश में हुआ था।

उदाहरण 2. कुँवर नारायण की कविता में 'संयम' और 'परिष्कार' से आप क्या समझते हैं?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि 'संयम' का मतलब होता है खुद पर नियंत्रण रखना, और 'परिष्कार' का मतलब है किसी चीज़ को और बेहतर बनाना, शुद्ध करना।

› कविताओं के संदर्भ में, 'संयम' का अर्थ है कि कवि ने अपनी बात कहने में फालतू के शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया, न ही भावनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताया। उन्होंने सिर्फ़ ज़रूरी बातें कहीं।

› और 'परिष्कार' का मतलब है कि उन्होंने अपनी भाषा को बहुत ही सोच-समझकर चुना, उसे साफ-सुथरा और प्रभावी बनाया। उनकी कविता में कोई चीज़ बेवजह नहीं है, हर शब्द का अपना महत्व है।

› तो कुल मिलाकर, इसका मतलब है कि उनकी कविताएँ बहुत ही सधी हुई, कम शब्दों में गहरी बात कहने वाली और कलात्मक रूप से निखरी हुई होती हैं।

उत्तर – कुँवर नारायण की कविता में 'संयम' का अर्थ है भाषा का अनावश्यक विस्तार न करके, कम और सटीक शब्दों में अपनी बात कहना; और 'परिष्कार' का अर्थ है भाषा को सुंदर, शुद्ध और प्रभावी बनाना, जिसमें कोई भी शब्द व्यर्थ न हो।

उदाहरण 3. 'कविता के बहाने' कविता का मुख्य संदेश क्या है?

› पहला कदम: कवि यह बताना चाहते हैं कि आज के यांत्रिक युग में जब लोग कविता के अस्तित्व पर सवाल उठाते हैं, तो कविता उन्हें जवाब देती है।

› दूसरा कदम: कविता चिड़िया, फूल और बच्चों के उदाहरणों के माध्यम से अपनी असीमित क्षमताओं को दर्शाती है।

› तीसरा कदम: चिड़िया की उड़ान सीमित होती है, फूल एक समय के बाद मुरझा जाते हैं, लेकिन कविता की उड़ान और खुशबू की कोई सीमा नहीं होती, वह समय और स्थान के बंधन से मुक्त है।

› चौथा कदम: बच्चों का खेल भी सीमाओं से परे होता है, ठीक वैसे ही कविता भी शब्दों का खेल है जो जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य सबको एक कर देती है।

उत्तर – इस कविता का मुख्य संदेश यह है कि कविता की संभावनाएँ असीम हैं और वह किसी भी सीमा में नहीं बँधती, चाहे वह घर की सीमा हो, भाषा की सीमा हो या समय की सीमा।

उदाहरण 4. कवि ने कविता की उड़ान को चिड़िया की उड़ान से किस प्रकार अलग बताया है?

› सबसे पहले, यह समझो कि चिड़िया की उड़ान की कुछ सीमाएँ होती हैं। वह एक निश्चित समय तक ही उड़ सकती है और एक जगह से दूसरी जगह तक ही जा सकती है।

› दूसरा, कविता की उड़ान इन सीमाओं से परे है। वह समय और स्थान के बंधन से मुक्त है।

› कवि कहता है कि कविता के 'पंख' विचारों के पंख हैं, जो कहीं भी पहुंच सकते हैं – 'बाहर, भीतर, इस घर, उस घर'।

› चिड़िया सिर्फ अपनी आँखों से देख पाती है, पर कविता के पंख तो कल्पना के पंख हैं, जो दिल की गहराइयों तक जा सकते हैं और पूरे संसार को एक साथ देख सकते हैं।

उत्तर – कवि के अनुसार, चिड़िया की उड़ान सीमित होती है, जबकि कविता की उड़ान असीमित होती है। कविता बिना पंखों के भी कल्पना और भावनाओं के सहारे 'बाहर, भीतर, इस घर, उस घर' कहीं भी उड़ सकती है और काल (समय) तथा स्थान के बंधनों से मुक्त होती है। चिड़िया क्या जाने कविता के पंख लगाकर उड़ने का मतलब।

उदाहरण 5. कवि ने कविता को 'खिलना' क्यों कहा है, और फूल इससे कैसे अलग हैं?

› कवि 'खिलना' शब्द का प्रयोग कविता के जन्म और उसके विकास के लिए करते हैं, जैसे एक कली से फूल खिलता है।

› फूल खिलते हैं और अपनी सुगंध फैलाते हैं, वैसे ही कविता भी अपनी सुंदरता और भावों की 'सुगंध' (असर) फैलाती है।

› लेकिन फूलों का जीवन सीमित होता है – वे कुछ समय बाद मुरझा जाते हैं और खत्म हो जाते हैं।

› कविता, फूलों के विपरीत, एक बार 'खिल' जाने पर कभी मुरझाती नहीं। उसके भाव, उसकी सुंदरता, उसका संदेश हमेशा ताज़ा रहता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोगों को प्रभावित करता रहता है।

उत्तर – कविता को 'खिलना' इसलिए कहा गया है क्योंकि वह भावनाओं और कल्पनाओं से जन्म लेकर अपनी सुंदरता और संदेश को चारों ओर फैलाती है, जबकि फूल अपनी सुगंध फैलाकर मुरझा जाते हैं, कविता बिना मुरझाए हमेशा महकती रहती है।

उदाहरण 6. कवि ने 'कविता के बहाने' में कविता को बच्चों के खेल के समान क्यों बताया है?

› पहला कदम: याद करो कि बच्चे कैसे खेलते हैं। क्या उनके खेल में कोई सीमा होती है?

› दूसरा कदम: सोचो कि बच्चे खेलते समय किन-किन घरों में जा सकते हैं और वे सबको कैसे एक कर देते हैं।

› तीसरा कदम: अब इसी समानता को कविता से जोड़ो। जैसे बच्चों के खेल की कोई सीमा नहीं, वैसे ही कविता भी किसी एक दायरे में नहीं बंधती।

› चौथा कदम: समझाओ कि कविता अपने भावों और कल्पनाओं से कैसे सभी घरों, सभी लोगों को एक करती है, उनमें एकता का भाव जगाती है।

उत्तर – कवि ने कविता को बच्चों के खेल के समान इसलिए बताया है, क्योंकि जैसे बच्चे खेलते समय किसी घर या व्यक्ति में कोई भेद नहीं करते, और सभी घरों को एक कर देते हैं, वैसे ही कविता भी अपनी भावनाओं और कल्पनाओं से सभी सीमाओं को तोड़कर, सभी लोगों को जोड़ती है और उनमें एकता का भाव जगाती है। यह सार्वभौमिक और बंधन-मुक्त होती है।

उदाहरण 7. कविता 'बात सीधी थी पर' में कवि किस चीज़ पर ज़ोर दे रहे हैं?

› कविता का नाम 'बात सीधी थी पर' से ही पता चलता है कि कवि बात की 'सीधी' होने पर, यानी उसकी सहजता पर ध्यान दे रहे हैं।

› कविता में बताया गया है कि भाषा को उलटने-पलटने से बात 'टेढ़ी' हो जाती है, जिससे उसका अर्थ खो जाता है।

› कवि अंत में कहते हैं कि हमें भाषा को 'सहूलियत से बरतना' सीखना चाहिए, जिसका मतलब है कि बात को आसान और सही शब्दों में कहना।

उत्तर – कवि 'बात सीधी थी पर' कविता में 'कथ्य' (जो बात कहनी है) की सहजता और 'माध्यम' (जिस भाषा में कहनी है) के सही तालमेल पर ज़ोर दे रहे हैं, ताकि बात अपना प्रभाव न खोए।

उदाहरण 8. कवि ने 'बात सीधी थी पर एक बार भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई' कहकर क्या समझाना चाहा है?

› कवि बताना चाहते हैं कि उनकी बात (कथ्य) बहुत सीधी और सरल थी।

› लेकिन जब कवि ने उसे प्रभावशाली बनाने के लिए कठिन और अनावश्यक शब्दों का प्रयोग किया।

› तो वह सीधी बात अपनी सरलता खोकर उलझ गई और उसका मूल अर्थ छिप गया।

› बात इतनी जटिल हो गई कि वह श्रोताओं तक सही से नहीं पहुँच पाई, बल्कि 'टेढ़ी' हो गई।

› कवि ने यह भी दर्शाया कि कई बार हम वाहवाही पाने के लिए अपनी बात को बेवजह मुश्किल बना देते हैं।

उत्तर – कवि यह समझाना चाहते हैं कि सीधी-सरल बात को भी जब हम अनावश्यक रूप से जटिल भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं, तो वह अपना सहज स्वरूप खोकर उलझ जाती है और उसका मूल प्रभाव समाप्त हो जाता है।

उदाहरण 9. कवि ने 'बात की चूड़ी मर जाना' मुहावरे का प्रयोग किस संदर्भ में किया है?

› पहले सोचो कि 'चूड़ी मर जाना' का मतलब क्या होता है, जब हम किसी पेंच की बात करते हैं।

› यह तब होता है जब पेंच को ज़बरदस्ती या गलत तरीके से कसने की कोशिश की जाती है, जिससे वह ढीला हो जाता है और अपनी जगह पर रुक नहीं पाता।

› अब इसे कविता के संदर्भ में देखो: कवि अपनी बात को ज़बरदस्ती मुश्किल भाषा में कहने की कोशिश कर रहा था।

› इस ज़बरदस्ती के कारण, और तमाशबीनों की झूठी शाबाशी के लालच में, बात का जो असली मतलब और गहराई थी, वो खत्म हो गई।

› जैसे चूड़ी मरा पेंच बेकार घूमता है, वैसे ही बात भी अपना अर्थ खोकर केवल शब्दों का आडंबर बनकर रह गई।

उत्तर – कवि ने 'बात की चूड़ी मर जाना' मुहावरे का प्रयोग यह समझाने के लिए किया है कि जब बात को जबरदस्ती कठिन भाषा में कहने का प्रयास किया जाता है और झूठी प्रशंसा के कारण उसे और उलझाया जाता है, तो बात का मूल प्रभाव, उसकी कसावट और ताकत समाप्त हो जाती है। बात अपना अर्थ खोकर भाषा के आडंबर में बेकार घूमने लगती है।

उदाहरण 10. एक ऐसे वाक्य की व्याख्या करो जिसमें 'बात की चूड़ी मर गई और मैंने उसे कील की तरह ठोंक दिया' मुहावरा सटीक बैठे।

› पहला चरण: सोचो एक नेताजी जो भाषण दे रहे हैं।

› दूसरा चरण: वे अपनी बात को बहुत कठिन शब्दों और लंबी-लंबी उपमाओं से सजाने लगते हैं।

› तीसरा चरण: लोग उनकी बात का असली मतलब नहीं समझ पाते, उनकी बात का प्रभाव खत्म हो जाता है, उसकी 'चूड़ी मर जाती है'।

› चौथा चरण: जब उन्हें दिखता है कि लोग ऊब रहे हैं, तो वे झटपट कुछ भी बोलकर भाषण खत्म कर देते हैं, जैसे 'कील की तरह ठोंक दिया'।

उत्तर – नेताजी का भाषण लोगों तक अपनी बात पहुँचाने में असफल रहा क्योंकि उन्होंने भाषा को अनावश्यक रूप से जटिल बना दिया, जिससे उनकी 'बात की चूड़ी मर गई', और अंत में उन्हें अपनी बात को बिना किसी प्रभाव के 'कील की तरह ठोंक' कर समाप्त करना पड़ा।

उदाहरण 11. कवि 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का क्या महत्व बताते हैं?

› कवि के अनुसार, भाषा को सहूलियत से बरतना मतलब उसका सहज और सरल प्रयोग करना।
› यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बात अपनी वास्तविक शक्ति और कसावट बनाए रखती है।
› अगर ऐसा न किया जाए तो सीधी बात भी टेढ़ी हो सकती है, यानी अपना अर्थ और प्रभाव खो सकती है।
› सही शब्दों के चुनाव और उचित प्रयोग से ही बात अपना पूरा असर दिखा पाती है।

उत्तर – कवि 'भाषा को सहूलियत से बरतने' का महत्व यह बताते हैं कि इससे बात अपनी वास्तविक शक्ति और कसावट बनाए रखती है, और सीधी बात भी टेढ़ी होने से बच जाती है। इसका अर्थ है भाषा का सहज और सरल प्रयोग ताकि वह अपना पूरा असर दिखा सके।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• कवि परिचय से संबंधित प्रश्न अक्सर बहुविकल्पीय या संक्षिप्त उत्तर वाले होते हैं, इसलिए जन्म-मृत्यु, मुख्य रचनाएँ और प्रमुख पुरस्कार याद रखना बहुत ज़रूरी है।

• बोर्ड परीक्षा में कुँवर नारायण की काव्यगत विशेषताओं पर प्रश्न अक्सर आता है। उनकी भाषा शैली, विषयों की विविधता और यथार्थवादी दृष्टिकोण को उदाहरणों के साथ समझाना महत्वपूर्ण है।

• यह कविता बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें कविता की तुलनात्मक व्याख्या और प्रतीकात्मक अर्थ अक्सर पूछे जाते हैं, खासकर 'सब घर एक कर देने के माने' वाले प्रश्न।

• बोर्ड परीक्षा में, इस तुलना को उदाहरण देकर स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि कैसे कविता की उड़ान चिड़िया की शारीरिक उड़ान से भिन्न और अधिक व्यापक है।

• इस कविता के प्रतीकात्मक अर्थ को समझना बहुत ज़रूरी है, खासकर 'बिना मुरझाए महकने के माने' वाले अंश पर ध्यान देना। यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?' यह प्रश्न अक्सर आता है।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से 'कथ्य और माध्यम का द्वंद्व' या 'भाषा की सहजता' से जुड़े प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं, इसलिए इसके मूल संदेश को अच्छे से समझना।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से 'बात सीधी थी पर एक बार भाषा के चक्कर में ज़रा टेढ़ी फँस गई' पंक्ति की व्याख्या अक्सर पूछी जाती है। ध्यान से समझें कि भाषा के अनावश्यक प्रयोग से बात का मूल अर्थ कैसे छिप जाता है।

• यह अंश बहुत महत्वपूर्ण है, अक्सर इसमें से कवि का भाव और 'बात की चूड़ी मरना' जैसे मुहावरों का अर्थ पूछा जाता है।

• यह अंश कविता के मूल संदेश को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। बोर्ड परीक्षा में इसकी व्याख्या या इस पर आधारित प्रश्न आ सकते हैं, इसलिए इसका अर्थ और निहितार्थ अच्छे से समझें।

• इस बिंदु से अक्सर 'भाषा को सहूलियत से बरतने का क्या अभिप्राय है?' या 'सीधी बात टेढ़ी क्यों हो जाती है?' जैसे प्रश्न पूछे जाते हैं। इन पर विशेष ध्यान दें।

एक नज़र में रिवीज़न

› कुँवर नारायण: जन्म 1927 (UP), 'चक्रव्यूह', 'आत्मजयी', ज्ञानपीठ, निधन 2017.
› संयम, परिष्कार, यथार्थ, खुलापन - कुँवर नारायण काव्य की पहचान।
› कविता की असीम संभावनाएँ, सीमाहीन उड़ान, चिड़िया-फूल-बच्चे के बहाने।
› कविता की उड़ान चिड़िया से असीमित; कल्पना के पंखों से उड़ती है।
› कविता फूलों सी खिलती है, पर कभी मुरझाए बिना महकती रहती है।

› कविता बच्चों के खेल सी सीमा-रहित, 'सब घर एक करने वाली' है।
› कवि कुंवर नारायण: 'बात सीधी थी पर' – कथ्य और माध्यम की सहजता.
› कठिन भाषा से सीधी बात उलझ जाती है, अर्थ खो देती है।
› झूठी शाबाशी से बात और पेचीदा होकर अर्थ खो देती है।
› जटिल भाषा से बात का प्रभाव खत्म होकर, वह बेजान कील बन जाती है।
› भाषा को सहूलियत से बरतना: सहज प्रयोग, बात में शक्ति व कसावट बनाए रखना।